

20, 128, 5. *übergenug haben an* (instr.): वि यो र्ऋष्य ऋषिर्भिन्रैर्भिवृत्तो न पृक्त्वाः RV. 4, 20, 5. — Vgl. विरप्सा, विरप्शान्.

रप्साह्वयन् (रप्सात्, partic. praes. von रप्स, + उ०) adj. *ein strotzen-des Enters habend* RV. 2, 34, 5.

रप्सु so v. a. रूप nach MAHIDH. zu VS. 33, 19; vgl. प्सुः, षप्सः, बप्सः NAIGH. 3, 7.

रप्सुदा du.: गाव उपावतावतं मृकी पृक्षस्य रप्सुदा RV. 8, 61, 12. Śi. und MAHIDH. haben werthlose Erklärungen. — Vgl. लप्सुद.

रफ्, रफति (गती, nach Vop. auch र्हिसायाम्) Dhātup. 11, 19. रफ् (रफ्), रफति (र्हिसायाम्) 28, 30. (आधयुद्धनिन्दार्हिसादानेषु) 23, v. 1. रफिते etwa *herabgekommen, elend* RV. 10, 117, 2. — Vgl. रम्फ, रफ.

रब्धर m. und रब्धी f. nom. ag. von र्म् MAHIDH. zu VS. 21, 46.

र्म्, रम्म्, र्म्ते (राभस्ये) Dhātup. 23, 5. P. 7, 1, 63. Vop. 11, 4. ◦रम्ति (meist aus metrischen Rücksichten); ◦रम्भे; ◦रम्भ्यः; ◦रम्भ्यते (vgl. Kār. 3 aus Siddh. K. zu P. 7, 2, 10); ◦रम्भ्युः; *fassen*: उत्तिष्ठ नारि त्वसं रम्भ्व AV. 11, 1, 14. *umfassen*: रम्भत (!) इव बाहुभिः Bhāg. P. 10, 73, 6. ष्रम्भत् *begann* HARIV. 8106 fehlerhaft für ष्रारम्भत्, wie die neuere Ausg. liest. — Vgl. लम् und यम्.

— caus. रम्भयति P. 7, 1, 63. ष्ररम्भत् Vop. 18, 1.

— desid. रिप्सते P. 7, 4, 54. Vop. 19, 9, 12.

— ष्रभि *umfassen, umarmen*: ष्रभिरेभिरे Bhāg. P. 10, 17, 4. 21, 6. 82, 15. — caus. 1) dass.: ष्रभिर्मित्त Bhāg. P. 10, 88, 7. — 2) *Jmd Etwas zu Theil werden lassen, versetzen in*; mit dopp. acc.: कण्मलं मरुद्भिर्मित्तः Bhāg. P. 5, 8, 12.

— ष्रा 1) *erfassen, anfassen; sich festhalten an, sich klammern, sich stützen auf*: ये त्वाभ्य चरोमसि RV. 1, 87, 4. पर्णा मृगस्य पतरोरिवारभे 182, 7. सिचम् 3, 53, 2. ष्रा त्वा रम्भं न जित्रयो र्ऋम्भ 8, 45, 20. 9, 73, 1. 10, 8, 3. सखिवम् 133, 6. 133, 3. जिह्वया 87, 2. समिधा 8. AV. 1, 7, 6. 5, 8, 9. रुन्तौ 8, 1, 8. शत्रून् 10, 3, 1. या रसस्य करुणाय ज्ञातमरिभे 1, 28, 3. 6, 76, 2. VS. 4, 9. Çat. Br. 6, 2, 2. 39. Āçv. Gṛh. 2, 6, 1. ष्रिरीरब्धः *Feuer, das gefangen hat* AV. 5, 18, 4. Çat. Br. 6, 2, 1, 20. *sich an Jmd machen, sich mit Jmd messen*: पारगामिनमारभेत् MBh. 13, 21, 27. जम्बुमालिनमारब्धो हनुमानपि so v. a. *kämpfte mit R.* 6, 18, 10. — 2) *Fuss fassen, betreten; erreichen*: धीरा इच्छेत्कुरुहोषोषारभम् RV. 9, 73, 3. मूर्धानं रायः 1, 24, 5. दिव इव सानुं 10, 62, 9. ष्रारभमाणा भुव्नानि विश्वा 128, 8. — 3) *sich an Etwas machen, unternehmen, anfangen, beginnen, incipere* VS. 4, 6. TBr. 3, 3, 3, 3. Ait. Br. 2, 6, 4, 10. ष्रारम्भणीयेन संवत्सरमारभते 12, 6, 7, 15. TS. 1, 6, 8, 1. 6, 4, 2, 1. Çat. Br. 1, 7, 4, 20. 3, 2, 1, 37. 7, 4, 5. 6, 2, 2, 18. वाचा ष्रारभते पृथदारभते 12, 2, 1, 1. ष्रारभ्य कर्माणि Çvetāçv. Up. 6, 4. ष्रारभेत ततः कार्यम् M. 9, 299. fg. MBh. 3, 1390. 3, 5973. R. 1, 12, 37. 2, 30, 42. 5, 33, 30. Çāk. 44, 5. Spr. 3713. 3367. Bhāg. P. 3, 20, 9. 4, 29, 58. 60. 5, 4, 13. 7, 7, 47. ष्रारिभिरे पुत्रीयामिष्टिम् Ragh. 10, 4. ष्रारभते ऽल्पमेवाज्ञाः Spr. 381. 476. 3538. पार्थे यत्नमारभ्य MBh. 3, 2175. ष्रारभकलिकामङ्गम् Çāk. 78, 16. चरणसंस्कारम् Mālav. 33, 12. धर्म्या र्हिसाम् Kām. Nit. 6, 5. वैरम् Spr. 2948. ष्रारुवम् Kathās. 23, 124. गुलिकाक्रोडात् 42, 8. ष्रार्थान् Bhāg. P. 4, 18, 5. व्रतम् 6, 19, 2. सत्तम् 9, 13, 1. 3. मारब्धा बलिवियक्तम् BHATT. 3, 38. क्रूरम् 17, 33. ष्रब्धिम् — ष्रारिभिरे so v. a. *sie begannen das Meer zu quirlen* Bhāg. P. 8, 7, 2. ष्रारभते ohne obj. im Gegens. zu ष्रास्ते

Bhāg. 3, 7. act.: कार्यदर्शनमारभेत् M. 8, 23. पापोदयफलं विद्वान्यो नारभति वर्धते MBh. 5, 1480. कर्माण्यकृमथारभम् 13, 3943. नारम्भानारभेत्क्वचित् Bhāg. P. 7, 13, 8. वेदादिमारभेत् *den Veda beginnen* nämlich *zu lesen* Āçv. Gṛh. 3, 5, 12. ष्रारब्धवान्क्रियाम् HARIV. 6495. मोक्षादारभ्यते कर्म Bhāg. 18, 25. MBh. 1, 3982. 3, 1416. तीव्रं चारप्स्यते तपः 13, 992. सम्यगारभ्यमाणं हि कार्यम् Spr. 3189. ष्रारभेत्मारभ्यते मित्रभेदे नाम प्रथमं तत्त्वम् *beginnt* PAÑKAT. 6, 1. इत्ययमतिदेश ष्रारभ्यते Kāç. zu P. 1, 1, 56. यथा कार्यं तथारभ्यताम् impers. Hit. 39, 8. *beginnen zu* mit infin. P. 3, 4, 65. ष्रामन्नयितुमारभे R. 2, 113, 18. R. Gorr. 1, 40, 23. 2, 109, 14. 3, 52, 12. Ragh. 8, 45. Kathās. 22, 224. 26, 237. 34, 71. Bhāg. P. 4, 27, 15. Daçak. in BENF. Chr. 182, 2. BHATT. 9, 29. 13, 78. act. HARIV. 8106 (ष्रारभत् die neuere Ausg. st. ष्रारभत् der älteren). R. 5, 68, 39. भोक्तुमारब्धवानन्नम् R. Schl. 1, 63, 5. 3, 31, 36. PAÑKAT. 64, 5. कुम्भकर्षणं पेषुमारम्भि (impers.) BHATT. 13, 58. मुग्धतपैव नेतुमखिलः कालः किमारभ्यते Spr. 2215. absol. ष्रारभ्य *von* — *an*; mit abl. Vop. 3, 21. स्वपितुर्वधात् । ष्रारभ्य Kathās. 10, 177. Kāç. zu P. 4, 1, 163. Rāçā-Tar. 1, 53. 138. Bhāg. P. 5, 1, 26. 7, 3. PAÑKAT. 49, 1. Hit. 111, 18. ष्रारभ्य सप्तमान्मासात् (bei BURN. zu lesen ◦मासात्) Bhāg. P. 3, 31, 10. 7, 1, 17. mit acc.: सूर्योदयमारभ्य *von Sonnenaufgang an* SARVADARÇANAS. 173, 2. प्रतिपदिनमारभ्य Bhāg. P. 8, 16, 48. पातालतलमारभ्य 11, 3, 10. Verz. d. Oxf. H. 102, a, No. 158. इत्येतमकारमारभ्य Vop. 7, 113. ष्रारभ्य *von heute an* Hit. 42, 2. 91, 21. 126, 16. कुट कौटिल्य इत्यारभ्य P. 1, 2, 1, Sch. partic. ष्रारब्ध a) *woran man sich gemacht hat, unternommen, angefangen, begonnen*: ◦यज्ञ Ait. Br. 1, 1. चिरारब्धमिदं चापि सागरस्यापि मन्थनम् MBh. 1, 1441. यथेदं व्रतमारब्धं मया 3, 2210. 16718. R. 2, 22, 24. 36, 14. 63, 28. 73, 21. Kām. Nit. 11, 57. रक्षसि — ष्रारब्धा वा तदाश्रयणी कथा Vikr. 31. Kathās. 14, 17. 18, 359. 22, 234. 26, 57. 32, 41. Rāçā-Tar. 3, 165. Bhāg. P. 1, 6, 29. वार्तायां लुप्यमानायामारब्धायां पुनः पुनः 3, 30, 12. 4, 11, 8. 13, 11. 18, 5. ष्रारब्धानेव बुभुजे भोगान् 21, 11. 5, 1, 16. 19, 19. ◦कामिजनवृत् Daçak. in BENF. Chr. 183, 6. Vedāntas. (Allah.) No. 144. क्रियाभिः सम्यगारब्धा व्रणाः so v. a. *zu curiren begonnen* Suçr. 1, 104, 11. येन न — ष्रारब्धा मार्गितुं सीता R. 4, 53, 6. को ऽयं कर्तुमिहारब्धो मन्त्रिणाप्यनयस्त्वया Kathās. 41, 16. तेन विकारः कारयितुमारब्धः Hit. 49, 10. केनापि देवायतनं कर्तुमारब्धम् PAÑKAT. 10, 4. एकस्मिन्दिवसे राजकुस्तान्मर्कटेन फलं गृहीत्वा भक्तयितुमारब्धम् (impers.) Vet. in LA. (III) 2, 7, 8. तस्या बालकेन गृहे रोदितुमारब्धम् 14, 8. 21, 18. — b) *seinen Anfang nehmend, beginnend*: कूले तूत्र ष्रारब्धः (सागरस्य सीमन्तः) R. 5, 93, 41. निशावसान ष्रारब्धो लोककल्पो ऽनुवर्तते Bhāg. P. 3, 11, 23. यत ष्रारब्ध एष नरलोकासार्थः 5, 14, 38. — c) = ष्रारब्धवत्, mit acc.: स्वमेव कर्म चारब्धौ HARIV. 3310. mit infin.: ते मन्त्रयितुमारब्धाः *sie fingen an zu* MBh. 1, 1108. सर्वी मर्कौ जेतुमारब्धौ 7660. 3, 2619. R. 3, 23, 16. 5, 56, 86. Mārk. P. 106, 57. PAÑKAT. 10, 9. 33, 11. 62, 23. 69, 7. mit loc.: ष्रारब्ध उद्यतपसि Bhāg. P. 4, 23, 4. — 4) *machen, bilden, zusammenfügen*: तृपौरारभ्यते रज्जुः Spr. 1937, v. 1. भूतिः पञ्चभिरारब्धे देके Bhāg. P. 3, 31, 30. ष्रविद्याकामकर्मभिः । ष्रारब्धः (कायः) 4, 20, 5. भूतिः पञ्चभिरारब्धेः (= देहाद्याकारेण परिणतिः) 11, 15. योगमायपारब्धपारमेष्ठमहेदयम् (ष्रारब्ध = ष्राविष्कृत Comm.) 3, 16, 15. — Vgl. ष्रारम्भ figg., ष्रारम्भाणीय, ष्रारम्भिन्, ष्रारभ्य. — caus. *anfangen, beginnen*: ष्रारम्भि-